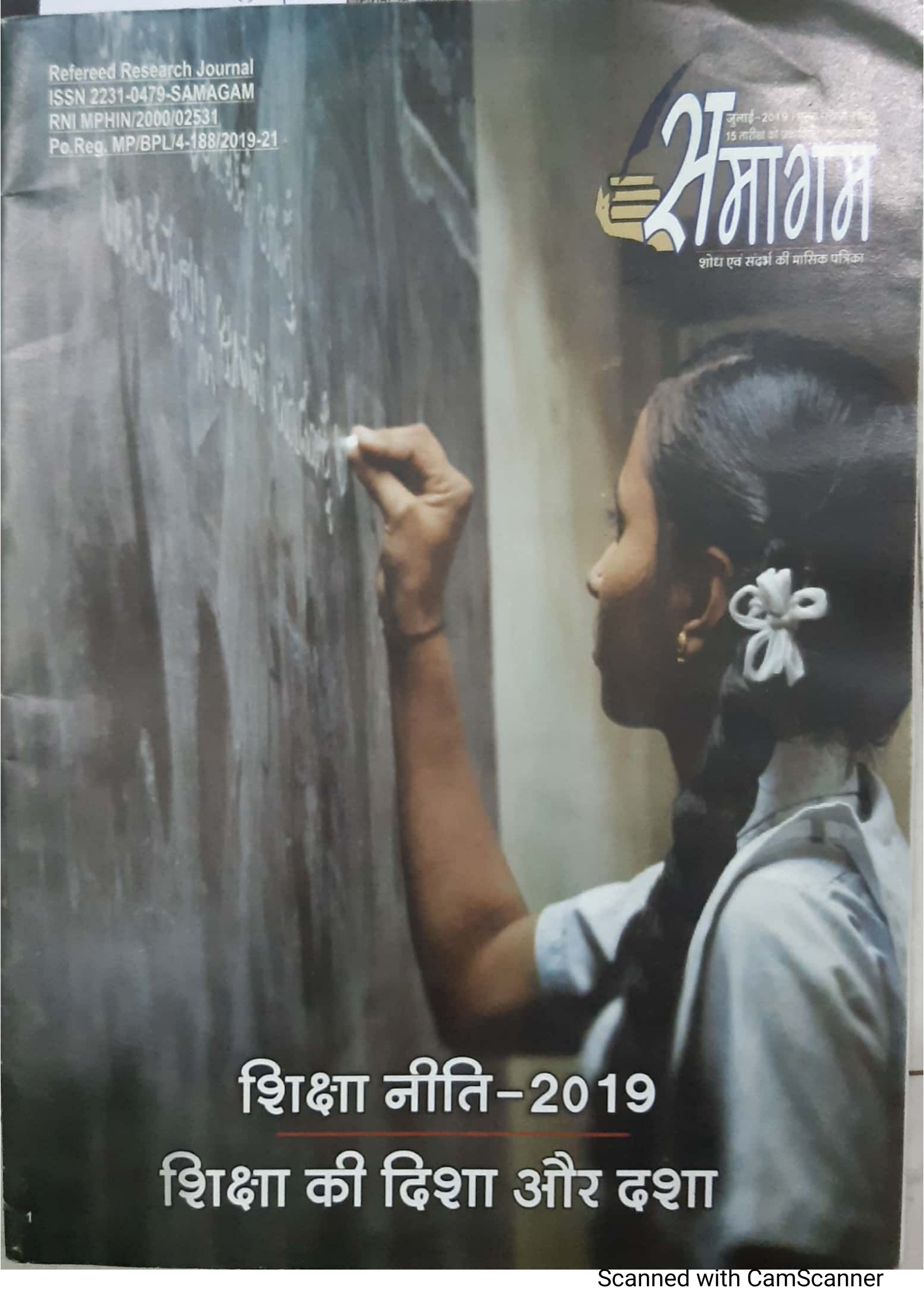


Refereed Research Journal
ISSN 2231-0479-SAMAGAM
RNI MPHIN/2000/02531
Po.Reg. MP/BPL/4-188/2019-21

जुलाई-2019 / अंक-10
15 तारीख को प्रकाशित
समागम
शोध एवं संदर्भ की मासिक पत्रिका

A young girl in a school uniform is writing on a chalkboard. She is seen from the side, with her hair in a braid tied with a white bow. The chalkboard has some faint writing on it.

शिक्षा नीति-2019

शिक्षा की दिशा और दशा

मनोज कुमार

सम्पादक

डॉ. विशाला शर्मा

सहयोगी सम्पादक

विषय-विशेषज्ञ

डॉ. सुधीर गव्हाणे

महानिदेशक (अकादमिक)

महात्मा गांधी मिशन ग्रुप ऑफ इंस्टीट्यूट, औरंगाबाद (महाराष्ट्र)

जगदीश उपासने

वरिष्ठ पत्रकार एवं पूर्व कुलपति

माखनलाल खतुबेदी राष्ट्रीय पत्रकारिता एवं संचार विश्वविद्यालय, भोपाल

गिरिजाशंकर

वरिष्ठ राजनीतिक विभूषक, भोपाल

प्रोफेसर डॉ. च्यांग चिंग खुई

विभागाध्यक्ष, हिन्दी विभाग

बीजिंग विश्वविद्यालय, चीन

विवेक मणि त्रिपाठी

असिस्टेंट प्रोफेसर (भारत अध्ययन)

कान्तोंग विदेशी भाषा विश्वविद्यालय, चीन

डॉ. आरफा राजपूत

हेड एवं एसोसिएट प्रोफेसर, मिनेसोटा संकाय

एशियन स्कूल ऑफ मीडिया स्टडीज, कोरहा, बुर्गी

प्रोफेसर (डॉ.) मनोज दयाल

प्रोफेसर एवं डॉन, फैक्टस्ट्री, मीडिया स्टडीज, गुरु जम्भेश्वर विज्ञान

और प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, हिसार, हरियाणा

डॉ. सोनाली नरगुंदे

विभागाध्यक्ष, पत्रकारिता एवं जनसंचार अध्ययनशाला

देवी अहिल्या विश्वविद्यालय, इंदौर

पुष्पेन्द्रपाल सिंह

प्रधान सम्पादक

रोजगार निर्माण, मध्यप्रदेश माध्यम, भोपाल

आकल्पन

अपूर्वा

हस्तोंर बागले गुणल

सदस्यता :

वार्षिक सदस्यता (व्यक्तिगत) : 6 सौ रुपये मात्र

वार्षिक सदस्यता (संस्थागत) : 1 हजार रुपये मात्र

सम्पर्क : 3, जूनियर एमआयजी, द्वितीय तल, अंकुर कॉलोनी,

शिवाजीनगर, भोपाल-16 E-mail: samagam2016@gmail.com

www.sabrangweb.com



ISSN 2231-0479

वर्ष-19

अंक-06

जुलाई-2019

भीतर के पन्नों पर

हस्तक्षेप

5-7

► विमर्श के मंच पर राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2019

शिक्षा विमर्श

8-15

► शिक्षा पर भारी नीति और उसका व्यवहार

► मातृभाषा ही शालेय शिक्षा में श्रेष्ठ

► भारत एवं चीन में वर्तमान शिक्षा की दशा और दिशा

दस्तावेज

16-18

► 7 जुलाई, सिनेमा से परिचय की पहली तारीख

गांधी विमर्श

19-21

► सम्पादक गांधी, प्रेस और सरकार की निरंकुशता

सिने विमर्श

22-24

► एक बगावती शायर : कैफ़ी आज़मी

शोध विमर्श

25-40

► हिन्दी गुज़ल का परिचय और विकास

► स्त्री विमर्श-दशा और दिशा

► एस. अहमद का कथा साहित्य और परिवर्तित जीवन मूल्य

► Reach and Use of ICT in Higher Education Sector in Madhya Pradesh

गतिविधियां

41-42

► चंदा बारगल का यूं चले जाना

► बजट से यूं सकते में आ गई है प्रिंट मीडिया इंडस्ट्री

► बजट 2019 नए टीवी चैनल को लेकर सरकार ने की ये घोषणा

हिन्दी ग़ज़ल का परिचय और विकास

जुगुल किशोर चौधरी

शोध-अध्येता, हिन्दी विभाग

डॉक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर, मध्यप्रदेश

डॉ. राजेन्द्र यादव

सहायक प्राध्यापक, हिन्दी विभाग

डॉक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर, मध्यप्रदेश

प्रस्तावना : ग़ज़ल विश्व की सबसे लोकप्रिय विधाओं में से एक है और 'हिन्दी ग़ज़ल' उसका व्यवस्थित रूप या चरम उत्कर्ष है। हिन्दी ग़ज़ल ने साहित्य में अपनी एक अलग स्वतंत्र पहचान बनाई है। हिन्दी ग़ज़ल अब महज एक फैशन नहीं बल्कि एक नवीन और अनिवार्य काव्यान्दोलनों के रूप में आगे बढ़ रही है। हिन्दी ग़ज़लकार 'समकालीन हिन्दी ग़ज़ल' को एक अलग मुकाम और दिशा देते नज़र आ रहे हैं। हिन्दी ग़ज़ल की सहजता और सम्प्रेषणीयता ही इसकी लोकप्रियता का आधार है।

की-वर्ड : ग़ज़ल, साहित्य, विद्वान, उर्दू, हिन्दी, कवि

ग़ज़ल एक बेहद आसान और सरल नज़र आने वाली शिन्फ है। हिन्दी ग़ज़ल का विकास कब और कहां से माना जाता है, इस विषय पर कोई ठोस निष्कर्ष विद्वानों, आलोचकों ने नहीं दिया। कुछ विद्वानों का मानना है कि- 'हिन्दी ग़ज़ल सबसे पहले हिन्दी में आई और बाद में उर्दू में। कुछ का मानना है कि उर्दू का जन्म मुगलकाल में हुआ और अमीर खुसरो ने तेरहवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध और चौदहवीं सदी के पूर्वार्द्ध के बीच वाले कालखंड में हिन्दी की ग़ज़लें लिखी।' इस तरह हिन्दी ग़ज़ल का अभ्युदय और उसका जनक या प्रथम कवि कौन है, इस विषय पर शुरू से ही मतभेद रहा है और आज तक इसका निष्कर्ष नहीं निकाला जा सका।

हिन्दी ग़ज़ल लिखने की परम्परा का विकास कोई अमीर खुसरो से, कोई कबीर से, कोई भारतेन्दु से मानता है, कोई शमशेर से, कोई निराला से आलोचक अपनी-अपनी लोकप्रियता और विद्वता के आधार पर 'हिन्दी ग़ज़ल' का पहला कवि होने का दावा ठोंकते नज़र आते हैं। मूलतः हिन्दी कवियों द्वारा रची गई ग़ज़लों को ही हिन्दी ग़ज़ल माना जाता है। हिन्दी ग़ज़ल का विकास कब से माना जाए और कौन इसका प्रवर्तक है इस पर विद्वानों ने जो मत स्पष्ट किए हैं उनमें से कुछ प्रमुख निष्कर्ष या मत इस प्रकार हैं-

त्रिलोचन शास्त्री के अनुसार- "हिन्दी में 20 वीं सदी के पहले दशक से ग़ज़लें लिखी जाने लगी। पहली किताब 'ब्रम्हानंद भजन माला' है। इस किताब को गायकों ने अपना लिया। इसमें ग़ज़लें काफी हैं। भाषा बहुत मार्जिन हिन्दी नहीं है। कहीं-कहीं ब्रजभाषा का स्पर्श है तो भी पहली किताब तो है ही। इसके बाद जयशंकर प्रसाद ने कुछ ग़ज़लें लिखी। ये चीजें उनकी रचनाओं के संकलनों में देखी जा सकती हैं। इसके अलावा रामनरेश त्रिपाठी, गयाप्रसाद शुक्ल

हिन्दी ग़ज़ल लिखने की परम्परा का विकास कोई अमीर खुसरो से, कोई कबीर से, कोई भारतेन्दु से मानता है, कोई शमशेर से, कोई निराला से आलोचक अपनी-अपनी लोकप्रियता और विद्वता के आधार पर 'हिन्दी ग़ज़ल' का पहला कवि होने का दावा ठोंकते नज़र आते हैं। मूलतः हिन्दी कवियों द्वारा रची गई ग़ज़लों को ही हिन्दी ग़ज़ल माना जाता है।